माननीय अध्यक्ष: आइटम नं. 12 – माननीय प्रधान मंत्री जी।

...(व्यवधान)

कुछ माननीय सदस्य: महात्मा गांधी की जय! महात्मा गांधी की जय! ...(व्यवधान)

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): बस इतना ही।

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): मोदी जी यह तो एक ट्रेलर हैं, बाकी अभी बाकी है।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: आपके लिए गांधी जी ट्रेलर हो सकते हैं, हमारे लिए गांधी जी जिंदगी हैं। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: गोगोई जी और अन्य माननीय सदस्य प्लीज बैठ जाइए।

डॉ. मोहम्मद जावेद (किशनगंज): सर, यह इलेक्शन स्पीच तो नहीं है।

माननीय अध्यक्ष: मैं आपको जवाब नहीं दूंगा। आप बैठ जाइए।

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर राष्ट्रपति जी का आभार व्यक्त करने के लिए उपस्थित हुआ हूं।

माननीय राष्ट्रपति जी ने न्यू इंडिया का विजन अपने अभिभाषण में प्रस्तुत किया है। 21वीं सदी के तीसरे दशक का माननीय राष्ट्रपति जी का यह वक्तव्य इस दशक के लिए हम सबको दिशा देने वाला, प्रेरणा देने वाला और देश के कोटि-कोटि जनों में विश्वास पैदा करने वाला यह अभिभाषण है। इस चर्चा में सदन के सभी अनुभवी माननीय सदस्यों ने बहुत ही अच्छे ढंग से अपनी-अपनी बातें

प्रस्तुत की हैं, अपने-अपने विचार रखे हैं। चर्चा को समृद्ध करने का हर किसी ने अपने तरीके से प्रयास किया है।

श्रीमान अधीर रंजन चौधरी जी, प्रो. सौगत राय जी, डॉ. शशि थरूर जी, श्रीमान ओवैसी जी, दानिश अली जी, राम कृपाल यादव जी, पी.पी. चौधरी जी, पिनाकी मिश्रा जी, अखिलेश यादव जी, विनायक राऊत जी कई नाम हैं। मैं सभी के नाम लूंगा तो शायद समय बहुत जाएगा। लेकिन मैं कहूंगा कि हर एक ने अपने-अपने तरीके से अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। लेकिन एक स्वर यह उठा है कि सरकार को इन सारे कामों की इतनी जल्दी क्या है? सब चीजें एक साथ क्यों कर रहे हैं? ऐसा भाव भी लोगों की बातों में से आता है। मैं शुरूआत में श्रीमान सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी की एक कविता को उद्धृत करना चाहूंगा और वही शायद हमारे संस्कार भी हैं, हमारी सरकार का स्वभाव भी है और उसी प्रेरणा के कारण हम लीक से हटकर के तेज गति से आगे बढ़ने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं। श्रीमान सर्वेश्वर दयाल जी ने अपनी कविता में लिखा है-

"लीक पर वे चलें, लीक पर वे चलें जिनके चरण दुर्बल और हारे हैं,
जिनके चरण दुर्बल और हारे हैं।
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने, हमें तो जो हमारी यात्रा से बने,
ऐसे अनिर्मित पथ ही प्यारे हैं।"

माननीय अध्यक्ष जी, और इसलिए लोगों ने सिर्फ एक सरकार बदली है, ऐसा नहीं है, सरोकार भी बदलने की अपेक्षा की है। एक नई सोच के साथ काम करने की इस देश की इच्छा और अपेक्षा के कारण हमें यहां आकर के सेवा करने का अवसर मिल रहा है। लेकिन अगर हम उसी तरीके से चलते, जिस तरीके से आप लोग चलते थे। उसी रास्ते से चलते, जिस रास्ते की आपको आदत हो गयी थी तो शायद 70 साल के बाद भी इस देश में से आर्टिकल 370 नहीं हटता।

आप ही के तौर-तरीकों से चलते, तो मुस्लिम बहनों को तीन तलाक की तलवार आज भी डराती रहती । अगर आप ही के रास्ते चलते, तो नाबालिगों से रेप के मामले में फांसी की सजा का कानून नहीं बन पाता । अगर आप ही की सोच के साथ चलते, तो राम जन्मभूमी आज भी विवादों में रहती ।...(व्यवधान) अगर आप ही की सोच होती, तो करतारपुर साहिब कॉरिडोर कभी नहीं बन पाता । अगर आप ही के तरीके होते, आप ही का रास्ता होता, तो भारत-बांग्लादेश सीमा विवाद कभी नहीं सुलझ पाता ।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: यह बांग्लादेश हम लोगों ने बनाया है**,** गांधी जी ने बनाया है ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : जब मैं माननीय अधीर जी को देखता हूं, सुनता हूं, तो मैं सबसे पहले किरेन रिजीजू जी को बधाई देता हूं, क्योंकि उन्होंने जो फिट इंडिया मूवमेंट चलाया है, उस फिट इंडिया मूवमेंट का प्रचार-प्रसार अधीर जी बहुत बढ़िया ढंग से करते हैं ।...(व्यवधान) ये भाषण भी करते हैं और भाषण के साथ-साथ जिम भी करते हैं ।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: लेकिन आपकी तरह ढोंगी आसन नहीं करते हैं**,** असली आसन करते हैं ।...(व्यवधान) एडवरटाइज़मेन्ट का आसन नहीं करते हैं । हम दिखावे का आसन नहीं करते हैं ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : फिट इंडिया मूवमेंट को बल देने के लिए, उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए, मैं माननीय सदस्य का धन्यवाद करता हूं ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, कोई इस बात से तो इंकार नहीं कर सकता है कि देश चुनौतियों से लोहा लेने के लिए हर पल कोशिश करता रहा है । कभी-कभी चुनौतियों की तरफ न देखने की भी आदतें देश ने देखी है । चुनौतियों का चुनने का सामर्थ्य नहीं है, ऐसे लोगों को भी देखा है । लेकिन आज दुनिया की भारत के प्रति जो अपेक्षा है, अगर हम चुनौतियों को चुनौती नहीं देंगे, अगर हम हिम्मत नहीं दिखाते

और अगर हम सबको साथ लेकर आगे चलने की गति नहीं बढ़ाते, तो शायद देश को अनेक समस्याओं से लंबे अर्से तक जूझना पड़ता।

और इसलिए माननीय अध्यक्ष जी, अगर कांग्रेस के रास्ते हम चलते, तो 50 साल के बाद भी शत्रु संपत्ति कानून का इंतजार देश को करते रहना पड़ता। 35 साल के बाद भी नेक्स्ट जेनरेशन लड़ाकू विमान का इंतजार देश को करते रहना पड़ता। 28 साल के बाद भी बेनामी संपत्ति कानून लागू नहीं हो पाता। 20 साल के बाद भी चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की नियुक्ति नहीं हो पाती।

माननीय अध्यक्ष जी, हमारी सरकार तेज़ गति की वजह से और हमारा मकसद है, हम एक नई लकीर बना कर, लीक से हट कर चलना चाहते हैं। और इसलिए हम इस बात को भली-भांति समझते हैं कि आजादी के 70 साल के बाद देश लंबा इंतजार करने के लिए तैयार नहीं है और नहीं होना चाहिए। और इसलिए हमारी कोशिश है कि स्पीड भी बढ़े और स्केल भी बढ़े। डिटरमिनेशन भी हो डेसीसिवनेस भी हो। सेंसिटीविटी भी हो और सॉल्युशन भी होना चाहिए। हमने जिस तेज़ गति से काम किया है, उस तेज़ गति से काम का परिणाम है कि देश की जनता ने पांच साल में देखा और देखने के बाद उसी तेज़ गति से आगे बढ़ने के लिए थोड़ी अधिक ताकत के साथ हमें फिर से सेवा करने का मौका दिया। अगर यह तेज़ गति नहीं होती तो 37 करोड़ लोगों के बैंक अकाउंट इतने कम समय में नहीं खुलते। अगर गति तेज़ न होती तो 11 करोड़ लोगों के घरों में शौचालय का काम पूरा नहीं होता। अगर तेज़ गति नहीं होती तो 13 करोड़ परिवारों में गेस का चूल्हा नहीं पहुंचता। अगर गति तेज़ न होती तो दो करोड़ नए घर गरीबों के लिए नहीं बनते। अगर तेज़ गति नहीं होती तो लंबे अर्से से अटकी हुई दिल्ली की 17 सौ से ज्यादा अवैध कॉलोनियां, 40 लाख से अधिक लोगों की ज़िंदगी जो अधर में लटकी हुई थीं, वह काम पूरा नहीं होता। आज उन्हें अपने घर का हक भी मिल गया है।

माननीय अध्यक्ष जी, यहां पर नॉर्थ-ईस्ट की भी चर्चा हुई है। नॉर्थ-ईस्ट को कितने दशकों तक इंतजार करना पड़ा। वहां पर राजनीतिक समीकरण बदलने का सामर्थ्य हो, इतनी सीटें नहीं हैं। और इसलिए राजनीतिक तराजू से जब निर्णय होते रहे तो हमेशा ही वह क्षेत्र उपेक्षित रहा। हमारे लिए नॉर्थ-ईस्ट वोट के तराजू से तोलने वाला क्षेत्र नहीं है। भारत की एकता और अखण्डता के साथ दूर-दराज क्षेत्रों में बैठे हुए भारत के नागरिकों के लिए और उनके सामर्थ्य का भारत के विकास के लिए उपयुक्त उपयोग हो, शक्ति उनके काम आए, देश को आगे बढ़ाने में काम आए, इस श्रद्धा के साथ वहां के एक-एक नागरिक के प्रति अपार विश्वास के साथ, आगे बढ़ने का हमारा प्रयास रहा है। और इसी के कारण नॉर्थ-ईस्ट में गत पांच वर्ष जो कभी उनको दिल्ली दूर लगती थी, आज दिल्ली उनके दरवाजे पर जा कर खड़ी हो गई है। मंत्री नॉर्थ-ईस्ट में लगातार दौरा करते रहे हैं। रात-रात वहां रुकते रहे, छोटे-छोटे इलाकों में जाते रहे - टीयर-2 और टीयर-3 - कितने सालों से गए? लोगों से संवाद किया, विश्वास का वातावरण पैदा किया । और विकास की जो आवश्यकताएँ होती हैं, जो 21वीं सदी से जुड़ी हुई हैं, चाहे बिजली की बात हो, चाहे रेल पहुँचाने की बात हो, चाहे हवाई अड्डे बनाने की बात हो, चाहे मोबाइल कनेक्टिविटी की बात हो, इन सब चीजों को हमने करने का प्रयास किया है और वह विश्वास कितना बड़ा परिणाम देता है, जो इस सरकार के कार्यकाल में देखा जा रहा है।

यहाँ पर यह बोडो की चर्चा आई है और यह कहा गया कि यह कोई पहली बार हुआ है। हमने भी कभी यह नहीं कहा कि पहली बार हुआ है। हम तो यही कह रहे हैं कि प्रयोग तो बहुत हुए हैं और अभी भी प्रयोग हो रहे हैं। लेकिन जो कुछ भी हुआ, राजनीतिक तराजू से लेखा-जोखा करके किया गया। जो भी किया गया, आधे-अधूरे मन से किया गया, जो भी किया गया, एक प्रकार से खाना-पूर्ति की गई और उसके कारण समझौते कागज पर तो हो गए थे, फोटो भी छप गई, वाहवाही भी हो गई, बड़े गौरव के साथ आज भी उसकी चर्चा हो रही है। लेकिन कागज पर किए गए समझौतों से इतने सालों के बाद भी बोडो समस्या का समाधान नहीं हुआ। चार हजार से ज्यादा निर्दोष लोग मौत के घाट उतारे

गए। अनेक प्रकार के एक्टोर्शन, पचासों प्रकार की बीमारियाँ समाज-जीवन को जो संकट में डाले, ऐसी होती चली गईं। इस बार जो समझौता हुआ है, वह एक प्रकार से नॉर्थ ईस्ट के लिए भी और देश में आर्म्स और हिंसा में विश्वास करने वालों के लिए एक संदेश देने वाली घटनाएँ हैं। यह ठीक है कि हमारा ज़रा वह इको-सिस्टम नहीं है, ताकि हमारी बात बार-बार उजागर हो, फैले। लेकिन हम मेहनत करेंगे, कोशिश करेंगे। लेकिन इस बार के समझौते की एक विशेषता है- सभी हथियारी ग्रुप एक साथ आए हैं। सारे हथियार और सारे अंडरग्राउंड लोगों ने सरेंडर किया है और दूसरा उस समझौते के एग्रीमेंट में लिखा है कि इसके बाद बोडो समस्या से जुड़ी हुई कोई भी माँग बाकी नहीं रह गई है। नॉर्थ ईस्ट में हम सबसे, सूरज तो पहले उगता है, लेकिन सुबह नहीं आती थी। सूरज तो आ जाता था, अंधेरा नहीं छंटता था। आज मैं कह सकता हूँ कि नई सुबह भी आई है, नया सवेरा भी आया है, नया उजाला भी आया है और वह प्रकाश जब आप अपने चश्मे बदलोगे, तब दिखाई देगा।...(व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर): जापान के प्रधान मंत्री...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : मैं आपका बहुत आभारी हूँ, ताकि बोलने के लिए बीच-बीच में मुझे आप विराम दे रहे हैं। कल यहाँ स्वामी विवेकानंद जी के कंधों से बंदूकें फोड़ी गईं। आपने उसको रिकार्ड पर से निकाल दिया है, इसलिए मैं उल्लेख तो नहीं करूँगा। लेकिन मुझे एक पुरानी छोटी-सी कथा याद आती है।

एक बार कुछ लोग रेल में सफर कर रहे थे और जब रेल में सफर कर रहे थे तो रेल जैसे गति पकड़ती थी, पटरी में से आवाज आती हैं, हम सब जानते हैं, सब का अनुभव है। तो वहाँ बैठे हुए एक संत-महात्मा थे। उन्होंने कहा- देखो, पटरी में से कैसी आवाज आ रही है। यह निर्जीव पटरी भी हमें कह रही है- 'प्रभु कर दे बेड़ापार'। बोले- देखो, यही आवाज आ रही है। सुनो, 'प्रभु कर दे बेड़ापार'। तो दूसरे संत ने कहा- नहीं यार, मैंने सुना। मुझे तो सुनाई दे रहा है- 'प्रभु तेरी लीला अपरम्पार'।

13.00 hrs

'प्रभु तेरी लीला अपरम्पार' । वहाँ एक मौलवी जी बैठे थे, उन्होंने कहा कि अरे भाई मुझे तो दूसरा सुनाई दे रहा है । इन संतों ने कहा कि आपको क्या सुनाई दे रहा है, तो उन्होंने कहा कि मुझे सुनाई दे रहा है कि 'या अल्लाह तेरी रहमत', 'या अल्लाह तेरी रहमत' । वहाँ एक पहलवान बैठे थे । उन्होंने कहा कि मुझे भी सुनाई दे रहा है । तो पहलवान ने कहा कि मुझे सुनाई दे रहा है कि 'खा रबड़ी कर कसरत', 'खा रबड़ी कर कसरत' ।...(व्यवधान) कल जो विवेकानन्द जी के नाम से कहा गया, जैसी मन की रचना होती है, वैसा ही सुनाई देता है, वैसा ही दिखाई देता है ।...(व्यवधान) आपको यह देखने के लिए इतनी दूर नजर करने की जरूरत ही नहीं थी, बहुत कुछ पास में है ।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: सर, अपने लोगों को कहिए कि स्वामी जी से आपकी तुलना न करें ।...(व्यवधान) इसलिए मैंने कहा था कि वे जोगी थे, आप... * हो ।...(व्यवधान) मैं अभी भी कह रहा हूँ ।...(व्यवधान) हम सब ... * हैं ।...(व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा): महोदय, ये अनपार्लियामेन्टरी शब्द बोल रहे हैं ।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, आप अपने लोगों से कहिए कि स्वामी जी का अपमान न करें ।...(व्यवधान) नरेंद्र दत्त, नरेंद्र दत्त थे ।...(व्यवधान) योगी और... * की एक साथ तुलना न करें ।...(व्यवधान) यह मैंने कहा था । मैंने यह भी कहा था कि "Each soul is potentially divine". ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य ।

...(<u>व्यवधान</u>)

---

* Not recorded.

पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन मंत्री (श्री गिरिराज सिंह): इनको **पता नहीं है कि ये क्या बोल रहे हैं।** …(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: आप जोड़ने की राजनीति कीजिए।…(व्यवधान) आप तोड़ने की राजनीति मत करो।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य**,** कृपया बैठ जाइए।

…(<u>व्यवधान</u>)

श्री गिरिराज सिंह : आपको पता है**,** क्या बोल रहे हो?…(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : ये सुरेश जी क्यों हंस रहे हैं? …(व्यवधान) इसमें कोई राज है भाई? …(व्यवधान) सुरेश जी, कभी आपका भी मौका आएगा, इतनी जल्दी मत करो।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, यहाँ किसानों के विषय में भी बातचीत हुई है। बहुत से महत्वपूर्ण काम और बहुत से नए तरीके से, नई सोच के साथ पिछले दिनों किए गए हैं और माननीय राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में उसका जिक्र भी किया है, लेकिन जिस प्रकार से यहाँ चर्चा करने का प्रयास हुआ है, मैं नहीं जानता हूँ वह अज्ञानवश है कि जानबूझकर है। क्योंकि कुछ चीजें ऐसी हैं, अगर जानकारियाँ होतीं तो शायद हम ऐसा न करते। हम जानते हैं कि 1.5 गुना एमएसपी करने वाला विषय कितने लंबे समय से अटका हुआ था। यह हमारे समय का नहीं था, पहले से था, लेकिन यह किसानों के प्रति हमारी जिम्मेदारी थी कि उस काम को भी हमने पूरा कर दिया है। मैं हैरान हूँ, सिंचाई योजनाएं 80-90 परसेंट धन खर्च करके 20-20 साल से पड़ी हुई थीं, कोई पूछने वाला नहीं था। फोटो निकलवा दी, बस काम हो गया। हमको करीब 99 ऐसी योजनाओं को हाथ लगाना पड़ा। एक लाख करोड़ रुपये से

ज्यादा खर्च करके उनको उसके लॉजिकल एंड तक ले गए और अब किसानों को उसका फायदा होना शुरू हो गया है।

प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना - इस प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना के तहत इस व्यवस्था से किसानों में एक विश्वास पैदा हुआ है। किसानों की तरफ से करीब 13 हजार करोड़ रुपये का प्रीमियम आया, लेकिन प्राकृतिक आपदा के कारण जो नुकसान हुआ, उसके तहत करीब 56 हजार करोड़ रुपये किसानों को बीमा योजना से प्राप्त हुए हैं।

किसान की आय बढ़े, यह हमारी प्राथमिकता है। इनपुट कॉस्ट कम हो, यह हमारी प्राथमिकता है। और पहले एम.एस.पी. के नाम पर क्या होता था? हमारे देश में पहले 7 लाख टन दाल और तिलहन की खरीद हुई, हमारे कार्यकाल में 100 लाख टन हुई। 7 और 100 का फर्क तो समझ में आएगा।

'ई-नाम' (ई-एन.ए.एम.) योजना है। आज डिजिटल वर्ल्ड है। हमारा किसान भी मोबाइल फोन से दुनिया के दाम देख रहा है, समझ रहा है। 'ई-नाम' योजना के नाते किसान बाजार में अपने माल को बेच सके, उस योजना को हमने लिया और मुझे खुशी है कि गांव का किसान, इस व्यवस्था से करीब पौने दो करोड़ किसान अब तक उससे जुड़ चुके हैं। किसानों ने अपनी पैदावार का करीब-करीब एक लाख करोड़ रुपये का कारोबार इस 'ई-नाम' योजना से किया है, टेक्नोलॉजी का उपयोग किया है।

हमने किसान क्रेडिट कार्ड का विस्तार हो, उसके साथ-साथ एलाइड एक्टीविटीज़ हो, चाहे वह पशुपालन हो, मछली पालन हो, मुर्गी पालन हो, सौर ऊर्जा की तरफ जाने का प्रयास हो, सोलर पम्प की बात हो, ऐसी नई, अनेक चीजें जोड़ी हैं, जिसके कारण आज उसकी आर्थिक स्थिति में भी एक बहुत बड़ा बदलाव आया है।

वर्ष 2014 में, हमारे आने से पहले, कृषि मंत्रालय का बजट 27 हजार करोड़ रुपये था। अब यह बढ़ कर पाँच गुना, पहले 27 हजार करोड़ रुपये था, अब बढ़ कर पाँच गुना लगभग डेढ़ लाख करोड़ रुपये तक हमने इसे पहुंचाया है।

'पी.एम.-किसान सम्मान निधि' योजना में किसानों के खाते में सीधे पैसे जाते हैं। अब तक करीब 45 हजार करोड़ रुपये किसानों के खाते में ट्रांसफर हो चुके हैं। कोई बिचौलिया नहीं, फाइलों की कोई झंझट नहीं, बस एक क्लिक दबाया और पैसे पहुंच गए। लेकिन, मैं यहां माननीय सदस्यों से जरूर यह आग्रह करूंगा कि राजनीति करते रहिए, करनी भी चाहिए क्योंकि मैं आपकी तकलीफ जानता हूं, लेकिन क्या हम राजनीति करने के लिए किसानों के हितों के साथ खिलवाड़ करेंगे? मैं उन माननीय सदस्यों से विशेष आग्रह करूंगा कि वे अपने राज्यों में देखें, जो किसानों के नाम पर बढ़-चढ़ कर बोल रहे हैं, वे जरा ज्यादा देखें कि क्या उनके राज्य के किसानों को 'पी.एम.-किसान सम्मान निधि' मिले, उसके लिए वे सरकारें किसानों की सूची क्यों नहीं दे रहे हैं? इस योजना के साथ क्यों नहीं जुड़ रहे हैं? इसमें नुकसान किसका हुआ? किसका नुकसान हुआ? उस राज्य के किसानों का हुआ। यहां कोई माननीय सदस्य ऐसा नहीं होगा, जो दबी जुबान में, वे खुल कर शायद न बोल पाएं, क्योंकि कहीं जगह पर बहुत कुछ होता है, लेकिन उन्हें पता होगा। उसी प्रकार से, मैं माननीय सदस्यों से कहूंगा, जिन्होंने किसानों के लिए बहुत कुछ कहा है कि उन राज्यों में जरा देखिए जहां आप किसानों से वादे कर-करके, बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर-करके वोट बटोर लिए, शपथ ले लिए, सत्ता-सिंहासन पा लिया, लेकिन किसानों के वादे पूरे नहीं किए गए। कम से कम यहां बैठे माननीय सदस्य उन राज्यों के भी प्रतिनिधि होंगे तो वे उन राज्यों से जरूर कहें कि किसानों को उनका हक देने में वे कोताही न बरतें।

माननीय अध्यक्ष जी, जब ऑल पार्टी मीटिंग हुई थी, तब मैंने विस्तार से सबके सामने एक प्रार्थना भी की थी और अपने विचार भी रखे थे । उसके बाद सदन के प्रारम्भ में जब मीडिया के लोगों

से मैं बात कर रहा था, तब भी मैंने कहा था कि यह सत्र हम पूरी तरह अर्थ, आर्थिक विषय, देश की आर्थिक परिस्थितियां, इन सारे विषयों को इस सत्र में हम समर्पित करेंगे । हमारे पास जितनी भी चेतना है, जितना भी सामर्थ्य है, जितनी भी बुद्धि प्रतिभा है, सबका निचोड़ इस सत्र में दोनों सदनों में हम लेकर आए हैं क्योंकि जो देश की दुनिया की जो आज आर्थिक स्थिति है, उसका लाभ उठाने के लिए भारत कौन से कदम उठाए, कौन सी दिशा को अपनाए, जिससे लाभ हो । मैं चाहूंगा कि यह सत्र, अभी भी समय है, ब्रेक के बाद भी जब मिलेंगे, तब भी पूरी शक्ति, मैं सभी सदस्यों से आग्रह करता हूं, हम आर्थिक विषयों पर गहराई से बोलें, व्यापकता से बोलें और अच्छे नये सुझावों के साथ बोलें, ताकि देश, विश्व के अंदर जो अवसर पैदा हुए, उसका फायदा उठाने के लिए पूरी ताकत से आगे बढ़े । मैं सबको निमंत्रित भी करता हूं और मैं मानता हूं कि आर्थिक विषयों के इस महत्वपूर्ण विषय पर बातचीत हम सबका सामूहिक दायित्व है और इस दायित्व बोध में पुरानी बातों को हम भूल नहीं सकते हैं, क्योंकि आज हम कहां हैं, उसका पता तब चलता है कि कल कहां थे । यह बात सही है कि जब हमारे माननीय सदस्य यह कहते हैं कि यह क्यों नहीं हुआ, यह कब होगा, यह कैसे होगा, कब तक करेंगे, यह जब सुनता हूं, तो कुछ लोगों को लगता होगा कि आप आलोचना करते हैं । मैं नहीं मानता हूं कि आप आलोचना करते हैं । मुझे खुशी है कि आप मुझे समझ पाए हैं, क्योंकि आपको विश्वास है, करेगा तो यही करेगा । इसलिए मैं आपकी इन बातों को आलोचना नहीं मानता हूं, मार्गदर्शक मानता हूं, प्रेरणा मानता हूं और इसलिए मैं इन सारी बातों का स्वागत करता हूं और स्वीकार करने का प्रयास भी करता हूं । इसलिए इस प्रकार की जितनी बातें बताई गई हैं, इसके लिए तो मैं विशेष रूप से धन्यवाद करता हूं, क्योंकि क्यों नहीं हुआ, कब होगा, कैसे होगा, ये अच्छी बातें हैं, देश के लिए हम सोचते हैं, लेकिन पुरानी बातों के बिना आज की बात को समझना थोड़ा कठिन होता है ।

हम जानते हैं कि पहले क्या काल खंड था । करप्शन, आए दिन चर्चा होती थी हर अखबार की हेडलाइन में, सदन में भी करप्शन पर ही लड़ाई चलती थी । सब जगह यही बोला जाता था ।

अनप्रोफेशनल बैंकिंग कौन भूल सकता है, कमजोर इंफ्रास्ट्रक्चर पॉलिसीज़ कौन भूल सकता है और संसाधनों की बंदरबांट, माई गॉड क्या करके रख दिया था? इन सारी स्थितियों में से बाहर निकलने के लिए हमने समस्याओं के समाधान खोजने की लाँग टर्म गोल के साथ एक निश्चित दिशा पकड़ करके, निश्चित लक्ष्य पकड़ करके उसको पूरा करने का हमने लगातार प्रयास किया है और मुझे विश्वास है, उसी का परिणाम है कि आज इकॉनामी में फिसकल डेफीसिट बनी रही है, महंगाई नियंत्रित रही है और मैक्रोइकॉनामिक स्टैबिलिटी भी बनी रही है । ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: सर, बेरोजगारी पर भी बोलिए । ...(व्यवधान) हिंदस्तान सुनना चाहता है कि बेरोजगारी पर आप क्या कहना चाहते हैं? ...(व्यवधान) नीरव मोदी, मेहुल चोकसी की बात कीजिए ।...(व्यवधान) नीरव मोदी और मेहुल चोकसी की बात कीजिए ।...(व्यवधान) बेरोजगारी की बात कीजिए ।...(व्यवधान) सरकार का कुछ काम ठीक नहीं है ।...(व्यवधान) हिंदुस्तान में बेरोजगारी आज सबसे बड़ी समस्या बन गई है ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: मैं आपका आभारी हूं, क्योंकि आपने मेरे प्रति विश्वास जताया है । यह भी काम हम ही करेंगे ।...(व्यवधान) हां, एक काम नहीं करेंगे ।...(व्यवधान) एक काम न करेंगे, न होने देंगे, वह है आपकी बेरोजगारी नहीं हटने देंगे ।...(व्यवधान)

जीएसटी का बहुत बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय हो, कॉरपोरेट टैक्स कम करने की बात हो, आईबीसी लाने की बात हो या एफडीआई रीजिम को लिब्रलाइज करने की बात हो । बैंकों को रिकैपिटलाइजेशन करने की बात हो, जो भी समय-समय पर आवश्यकता रही है, जो चीज दीर्घकालीन मजबूती की जरूरत हैं, वे सारे कदम हमारी सरकार ने उठाए हैं और उसके लाभ भी आने शुरू हो गए हैं और वे रिफार्म्स जिसकी चर्चा हमेशा हुई है, आपके यहां जो भी पंडित लोग थे, वे हमेशा यही कहते रहते थे

लेकिन कर नहीं पाते थे । अर्थशास्त्री भी जिन बातों की बातें करते थे, आज एक के बाद एक उसको लागू करने का काम हमारी सरकार कर रही है ।

इन्वेस्टर्स का भरोसा बढ़े, अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले, उसको लेकर भी हमने कई महत्वपूर्ण निर्णय किए हैं । जनवरी 2019 से 2020 के बीच छह बार जीएसटी रेवेन्यू एक लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहा है । अगर मैं एफडीआई की बात करूं, अप्रैल 2018 से सितम्बर में एफडीआई 22 बिलियन डॉलर था, आज उसी अवधि में यह 26 बिलियन डॉलर पार कर गया है । इस बात का सबूत है कि विदेशी निवेशकों का भारत के प्रति विश्वास बढ़ा है । भारत की अर्थव्यवस्था पर विश्वास बढ़ा है । भारत में आर्थिक क्षेत्र में अपार अवसर है, यह कन्विकशन बना है, तब जाकर लोग जाते हैं और तभी लोग गलत अफवाहें फैलाने के बावजूद भी लोग बाहर निकल कर आ रहे हैं, यह बहुत बड़ी बात है ।

श्री अधीर रंजन चौधरी: अध्यक्ष महोदय, पेट खाली बजाओ ताली ।

श्री नरेन्द्र मोदी: अध्यक्ष महोदय, हमारा विजन ग्रेटर इन्वेस्टमेंट, बेटर इन्फ्रास्ट्रक्चर, इन्क्रीज वैल्यू एडिशन और ज्यादा से ज्यादा जॉब क्रिएशन पर है ।

श्री अधीर रंजन चौधरी: अध्यक्ष महोदय**,** आपका रिपोर्ट कार्ड कहता है कि जॉब नहीं है ।

श्री नरेन्द्र मोदी: देखिए**,** मैं किसानों से बहुत कुछ सीखता हूं । किसान जो होता है वह बड़ी गर्मी में खेत जोतकर तैयार रखता है लेकिन उस समय बीज नहीं बोता है, सही समय पर बीज बोता है । अभी जो दस मिनट से चल रहा है, वह मेरा खेत जोतने का काम चल रहा है । अब बराबर आपके दिमाग में जगह हो गई है, अब मैं एक-एक करके बीज डालूंगा ।

माननीय अध्यक्ष जी, मुद्रा योजना स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया योजनाओं ने देश में स्वरोजगार को बहुत बड़ी ताकत दी है । इतना ही नहीं इस देश में करोड़ों लोग पहली बार मुद्रा योजना लेकर खुद रोजी-रोटी कमाने लगे हैं और दूसरे लोगों को भी रोजगार देने का काम कर रहे हैं । इतना ही नहीं पहली बार मुद्रा योजना के माध्यम से बैंकों से जिनको धन मिला है, उसमें 70 प्रतिशत हमारी माताएं व बहनें हैं ।

जो पहले इकोनॉमिक एक्टिविटी के क्षेत्र में नहीं थीं, वे आज कहीं न कहीं इकोनॉमी को बढ़ाने में योगदान दे रही हैं । 28,000 से ज्यादा स्टार्ट अप रिकोग्नाइज्ड हुए, और आज खुशी की बात है कि टियर-2, टियर-3 सिटी में यानी हमारे देश के युवा नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहा है ।

मुद्रा योजना के तहत 22 करोड़ से ज्यादा ऋण स्वीकृत हुए हैं और करोड़ों युवाओं ने खुद ने रोजगार को पाया है । …(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : एनपीए के बारे में बताइए । …(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: अधीर रंजन जी, ऐसा करता हूं, आप एक समय तय कीजिए, आपको जितना कहना है, मैं दोबारा बैठ जाऊंगा, क्योंकि ये सब लोग पीछे हंस रहे हैं । आपकी प्रतिष्ठा को झटका लगे, अच्छा नहीं है ।…(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: मेरी प्रतिष्ठा के लिए आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है । मैं काफी सैल्फ सफिशिएंट हूं ।…(व्यवधान) लेकिन आप जो उलटी-सीधी बात कर रहे हैं, तो मेरी ड्यूटी है कि मैं उस बात को रजिस्ट करूं । आप गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं ।…(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: इस देश की 70 साल की राजनीति ऐसी रही है कि कोई कांग्रेसी सैल्फ सफिशिएंट नहीं हो सकता**,** ऐसा हो ही नहीं सकता ।…(व्यवधान)

वर्ल्ड बैंक के डेटा ऑफ एन्टरप्रियोनर्स में भारत का दुनिया में तीसरा स्थान है । सितंबर 2017 से नवंबर 2019 के बीच ईपीएफओ पेरोल डाटा में 1 करोड़ 39 लाख नए सब्सक्राइबर्स आए हैं, बिना रोजगार के कोई पैसा जमा नहीं करता है ।

मैंने कांग्रेस के एक नेता का कल घोषणा-पत्र सुना । उन्होंने घोषणा की है कि छ: महीने में मोदी को डंडे मारेंगे और यह बात सही है कि यह काम जरा कठिन है तो तैयारी के लिए छ: महीने तो लगते ही हैं । ...(व्यवधान) छ: महीने का समय तो अच्छा है, लेकिन मैंने भी तय किया है कि इन छ: महीने रोज़ सूर्य नमस्कार की संख्या बढ़ा दूंगा ताकि अब तक करीब 20 साल से जिस प्रकार की गंदी गालियां सुन रहा हूं, और अपने आपको गालीप्रूफ बना दिया है, छ: महीने ऐसे सूर्य नमस्कार करूंगा, ऐसे सूर्य नमस्कार करूंगा कि मेरी पीठ को भी हर डंडे झेलने की ताकत वाला बना दूंगा । ...(व्यवधान) मैं आभारी हूं कि पहले से एनाउंस कर दिया गया है, तो मुझे छ: महीने एक्सरसाइज़ बढ़ाने का टाइम मिलेगा ।

श्री राहुल गांधी (वायनाड): आप रोजगार की बात कीजिए ।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: आप बेरोजगारी की बात कीजिए । ...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी, मैं 30-40 मिनट से बोल रहा हूं, लेकिन करंट पहुंचते-पहुंचते इतनी देर लग गई । ...(व्यवधान) बहुत सी ट्यूबलाइट का ऐसा ही होता है ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, इंडस्ट्री 4.0 और डिजिटल इकोनॉमी, ये करोड़ों नई जॉब्स के लिए अवसर लेकर आती हैं । स्किल डेवलपमेंट, नई स्किल फोर्स तैयार करना, लेबर रिफार्म्स का प्रस्ताव ऑलरेडी संसद में आगे बढ़ा है और भी कुछ प्रस्ताव हैं, मुझे विश्वास है कि यह सदन उसको भी बल देगा ताकि देश में रोजगार के अवसरों में कोई रूकावट न आए । हम पिछली सदी की सोच के साथ आगे नहीं बढ़ सकते हैं । हमें बदली हुई वैश्विक परिस्थिति में नई सोच के साथ इन सारे बदलावों के

लिए आगे आना होगा । मैं इस सदन के सभी माननीय सदस्यों से प्रार्थना करता हूं कि लेबर रिफार्म्स के जो काम हैं, जो सब लेबर यूनियनों के साथ मिलकर तय हुआ है, उसको जितना जल्दी आगे बढ़ाएंगे, रोजगार के नए अवसरों के लिए सुविधा बढ़ेगी और मैं विश्वास करता हूं ।

फाइव ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी, इज ऑफ डूइंग बिजनेस, इज ऑफ लिविंग, ये ऐसे नहीं होते हैं । …(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: ग्लोबल हंगर इंडेक्स में आप कांग्रेस से भी पीछे हो गए हैं । ग्लोबल हंगर इंडेक्स में आप ही सबसे पीछे हैं क्यों? …(व्यवधान) सारा प्रोफिट मेकिंग इंडस्ट्री को धड़ल्ले से बेचा जा रहा है । …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी कोई टिप्पणी मत कीजिए ।

…(<u>व्यवधान</u>)

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी, यह बात सही है कि हमने आने वाले दिनों में 16 करोड़ का इंफ्रास्ट्रक्चर का मिशन लेकर आगे चल रहे हैं । लेकिन, पिछले कार्यकाल में भी आपने देखा होगा कि देश की इकोनॉमी को ताकत देने के लिए, मजबूती देने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर का बहुत बड़ा महत्व होता है । जितना ज्यादा बल इंफ्रास्ट्रक्चर की गतिविधियों को देते हैं, वह इकोनॉमी को भी ड्राइव करता है, रोजगार को भी देता है और नए-नए उद्योगों को भी अवसर देता है । और इसलिए, हमने इंफ्रास्ट्रक्चर के पूरे काम में एक नई गति लाई है । वरना, पहले इंफ्रास्ट्रक्चर का मतलब यही होता था कि सीमेंट कांक्रीट के जंगलों की बात, पहले इंफ्रास्ट्रक्चर का मतलब होता था टेंडर की प्रक्रियाएं, पहले इंफ्रास्ट्रक्चर का मतलब होता था बिचौलिए । यही इंफ्रास्ट्रक्चर की बात आती थी तो लोगों को यही लगता था कि कुछ बू आती थी । आज हमने ट्रांसपरेंसी के साथ 21वीं सदी में आधुनिक भारत बनाने के लिए जिस इंफ्रास्ट्रक्चर की कल्पना कर सकते हैं, उस पर बल दिया है । हमारी भूमि हमारे लिए

इंफ्रास्ट्रक्चर है । यह सिर्फ एक सीमेंट कांक्रीट का खेल नहीं है । मैं मानता हूं कि इंफ्रास्ट्रक्चर एक भविष्य लेकर आता है । कारगिल से कन्याकुमारी और कच्छ से कोहिमा, इसको अगर जोड़ने का काम करने की ताकत किसी में होती है तो इंफ्रास्ट्रक्चर में होती है । एस्पीरेशन्स और एचीवमेंट्स को जोड़ने का काम इंफ्रास्ट्रक्चर करता है । लोगों और उनके सपनों को उड़ान देने की ताकत अगर कहीं होती है तो इंफ्रास्ट्रक्चर में होती है । लोगों की क्रिएटिविटी को कंज्यूमर्स के साथ जोड़ने का काम इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण ही संभव हो सकता है । एक बच्चे को स्कूल से जोड़ने का काम, छोटा ही क्यों न हो, वह इंफ्रास्ट्रक्चर करता है । एक किसान को बाजार से जोड़ने का काम इंफ्रास्ट्रक्चर करता है । एक व्यवसायी को उसके कंज्यूमर के साथ जोड़ने का काम भी इंफ्रास्ट्रक्चर करता है । ...(व्यवधान) प्रदूषण को नियंत्रित करके स्वस्थ जीवन से जोड़न का काम भी इंफ्रास्ट्रक्चर करता है । लोगों को लोगों से जोड़ने का काम भी इंफ्रास्ट्रक्चर करता है । एक गरीब प्रेगनेंट मां को भी अस्पताल से जोड़ने का काम इंफ्रास्ट्रक्चर करता है । और इसीलिए, इरीगेशन से लेकर इंडस्ट्री तक, सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर रूरल इंफ्रास्ट्रक्चर तक, रोड से लेकर पोर्ट तक और एयरवेज से लेकर वाटरवेज तक हमने अनेक ऐसे इनीशिएटिव्स लिए हैं । गत पांच वर्षों में देश ने देखा है और लोगों ने देखा है, तभी तो यहां बैठाया है । यही तो इंफ्रास्ट्रक्चर है जो यहां पहुंचाता है । ...(व्यवधान)

हमें यूपी की जनता ने बता दिया है ।...(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं कि हमारे यहां इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में कैसे काम होता था । सिर्फ हमारी दिल्ली का विषय ही ले लीजिए । दिल्ली में ट्रैफिक, इन्वायरमेंट और हजारों ट्रक दिल्ली के बीच से गुजर रहे थे । यूपीए सरकार ने दिल्ली के सराउंडिग पेरिफेरल एक्सप्रेस वे को वर्ष 2009 तक पूरा करने का संकल्प लिया था । हम वर्ष 2014 में आएं, तब तक वह कागजों में लकीरें बनकर पड़ा हुआ था । वर्ष 2014 के बाद मिशन मोड में हमने इस काम को लिया और आज पेरिफेरल एक्सप्रेस वे का काम पूरा हो गया । आज चालीस हजार ट्रक्स दिल्ली में नहीं आते हैं, वे सीधे बाहर जाते हैं । आज दिल्ली को प्रदूषण से बचाने

के लिए यह एक अहम कदम है, लेकिन इन्फ्रास्ट्रक्चर का महत्व क्या होता है? अगर वर्ष 2009 तक पूरा करने का सपना वर्ष 2014 तक कागजों में लकीर बनकर पड़ा रहा हो तो यह अंतर है । उसको समझने के लिए थोड़ा टाइम लगेगा ।

माननीय अध्यक्ष जी, कुछ और विषयों को भी मैं स्पष्ट करना चाहता हूं । शशि थरूर जी, आपको नींद आती होगी, लेकिन फिर भी, क्योंकि कुछ लोगों ने बार-बार यहां पर संविधान बचाने की बातें की हैं । मैं भी मानता हूं कि कांग्रेस को संविधान बचाने की बात दिन में 100 बार बोलनी चाहिए । संविधान बचाओ, संविधान बचाओ, कांग्रेस के लिए मंत्र होना चाहिए । यह जरूरी है, क्योंकि संविधान के साथ कब और क्या हुआ, अगर आप संविधान का महत्व समझते तो संविधान के साथ यह नहीं हुआ होता । इसलिए आप जितनी बार संविधान बोलेंगे तो हो सकता है कि कुछ चीजें आपको अपनी गलतियों का अहसास करवा देंगी । आपके इरादों का अहसास करवा देंगी और इस देश में सच में संविधान महामूल्य है, इसका भी अनुभव कराएगी ।

माननीय अध्यक्ष जी, ये वही लोग हैं । क्या आपको इमरजेंसी में संविधान बचाने का काम याद नहीं आया था । यही लोग हैं, इनको संविधान बचाने के लिए बार-बार बोलने की जरूरत है, क्योंकि न्यायपालिका से न्यायिक समीक्षा का अधिकार छीनने का पाप इन्होंने ही किया है । जिन लोगों ने लोगों से जीने का कानून छीनने की बात कही थी, उन लोगों को बार-बार संविधान बोलना भी पड़ेगा और पढ़ना भी पड़ेगा । जो लोग संविधान में सबसे ज्यादा बार बदलाव करने के प्रस्ताव को लेकर आए हैं तो उन लोगों के पास संविधान बचाने की बात बोलने के अलावा कोई चारा नहीं है । दर्जनों बार राज्य की सरकारों को बर्खास्त कर दिया है, लोगों की चुनी हुई सरकारों को बर्खास्त कर दिया है, उनके लिए संविधान बचाना, यह बोल-बोल कर इन संस्कारों को जीने की आवश्यकता है । लोकतंत्र और संविधान से बनी हुई कैबिनेट ने एक प्रस्ताव पारित किया हो और उस प्रस्ताव को प्रेस कान्फ्रेंस में फाँड देना, उन लोगों के लिए संविधान बचाने की शिक्षा लेना बहुत जरूरी है और उन लोगों को बार-

बार संविधान बचाओ का मंत्र बोलना बहुत जरूरी है । पी.एम. और पी.एम.ओ. के ऊपर नेशनल एडवाइजरी काउंसिल, रिमोट कंट्रोल से सरकार चलाने का तरीका करने वालों को संविधान का महात्म्य समझना बहुत जरूरी है । ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: आप इस तरह की बातें मत करिए । ...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी, ...(व्यवधान) संविधान की वकालत के नाम पर दिल्ली और देश में क्या-क्या हो रहा है, उसे देश भलीभांति देख रहा है, समझ भी रहा है और देश की चुप्पी भी कभी न कभी तो रंग लाएगी । सर्वोच्च अदालत, जो संविधान के अंतर्गत सीधा-सीधा एक महत्वपूर्ण अंग है । देश की सर्वोच्च अदालत बार-बार कहे कि आन्दोलन ऐसे न हो जो सामान्य मानवी को तकलीफ दे, आन्दोलन ऐसे न हो जो हिंसा के रास्ते पर चल पड़े । ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: यूपी में क्या हुआ? ...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी, बार-बार सुप्रीम कोर्ट के कहने के बाद भी ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: आप बड़ी-बड़ी बात कहते हैं, यूपी में क्या हुआ?...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: अधीर जी, आपने इतनी मेहनत की है, अब आपका सी.आर. ठीक हो गया है । ...(व्यवधान) आपका सी.आर. ठीक हो गया है ।

श्री अधीर रंजन चौधरी: यूपी में क्या हुआ, आपको बोलना पड़ेगा ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: आपका सी.आर. ठीक हो गया है । ...(व्यवधान) संविधान को बचाने की बातें करते हैं, लेकिन यही वामपंथी लोग, यही कांग्रेस के लोग, यही वोट बैंक की राजनीति करने वाले लोग वहां जा-जाकर के उकसा रहे हैं, भड़काऊ बातें कर रहे हैं । ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: आपके एक मंत्री कहते हैं कि गोली से उड़ा दो ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी, एक शायर ने कहा था और शायद वह इस स्थिति पर बहुत सटीक है:

"खूब पर्दा है कि चिलमन से लगे बैठे हैं, साफ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं ।"

पब्लिक सब जानती है, सब समझती है । जिस तरह के बयान दिए गए, सदन में उसका जिक्र करना सही नहीं है । माननीय अध्यक्ष जी पिछले दिनों जो भाषाएं बोली गईं, जिस प्रकार के वक्तव्य दिए गए हैं, ...(व्यवधान) और सदन के बड़े नेता भी वहां पहुंच जाते हैं, इसका बहुत बड़ा अफसोस है । ...(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय: लेकिन शाहीन बाग में गोली चलाना सही नहीं है ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: कांग्रेस के समय में ...(व्यवधान) दादा, पश्चिम बंगाल के पीड़ित लोग यहां बैठे हैं, वहां क्या चल रहा है, अगर वे इसका कच्चा चिट्ठा खोल देंगे तो दादा आपको तकलीफ होगी । ...(व्यवधान) दादा, आपको तकलीफ होगी । ...(व्यवधान) वहां निर्दोष लोगों को किस प्रकार से मौत के घाट उतार दिया जाता है, वह भलीभांति जानते हैं लोग । ...(व्यवधान)

अध्यक्ष जी, मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि कांग्रेस के समय में संविधान की क्या स्थिति थी, लोगों के अधिकारों की क्या स्थिति थी? जैसा हम मानते हैं कि संविधान इतना महत्वपूर्ण है, यदि ये मानते होते, तो जम्मू-कश्मीर में हिंदुस्तान का संविधान लागू करने के लिए आपको किसने रोका था? इसी संविधान के दिए अधिकारों से जम्मू-कश्मीर के मेरे भाइयों-बहनों को वंचित रखने का पाप किसने किया है और शशि जी, आप तो जम्मू-कश्मीर के दामाद रहे हैं । आप उन बेटियों की चिंता करते ।...(व्यवधान) आप संविधान की बात करते हो और इसलिए .....

माननीय अध्यक्ष जी, एक माननीय सांसद ने कहा कि जम्मू-कश्मीर ने अपनी आइडेंटिटी खोई है । किसी की नजर में तो जम्मू-कश्मीर तो केवल जमीन ही थी ।...(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी कश्मीर में जिन्हें सिर्फ जमीन ही दिखती है, उन्हें इस देश का कुछ अंदाज नहीं है और यह उनकी बौद्धिक दरिद्रता का परिचय करवाता है ।...(व्यवधान) कश्मीर भारत का मुकुट मणि है ।...(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, कश्मीर की आइडेंटिटी बम, बंदूक और अलगाववाद बना दी गई थी । लोग आइडेंटिटी की बात करते हैं, कुछ लोगों ने 19 जनवरी, 1990 की काली रात के समय कश्मीर की आइडेंटिटी को दफना दिया था । कश्मीर की आइडेंटिटी सूफी परम्परा है । कश्मीर की आइडेंटिटी 'सर्व पंथ सम्भाव' की है । कश्मीर के प्रतिनिधि माँ लाल देद, नंद ऋषि, सैयद बुलबुल शाह, मीर सैयद अली हमदानी ये कश्मीर की आइडेंटिटी हैं । कुछ लोग कहते हैं कि आर्टिकल 370 हटाने के बाद आग लग जाएगी । ये कैसे भविष्यवेता हैं? कुछ लोग कहते हैं कि कुछ नेता जेल में हैं, फलां हैं, वगैरह - वगैरह । यह सदन संविधान की रक्षा करने वाला सदन है, यह संविधान को समर्पित सदन है । यह संविधान का गौरव करने वाला सदन है । यह संविधान के प्रति दायित्व निभाने वाले सदस्यों से बना हुआ सदन है, इसलिए सभी माननीय सदस्यों की आत्मा को छूने की आज कोशिश करना चाहता है, अगर है तो! ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, महबूबा मुफ्ती जी ने 5 अगस्त को क्या कहा था? संविधान को समर्पित लोग जरा ध्यान से सुने कि महबूबा मुफ्ती जी ने क्या कहा था । ये शब्द बहुत गंभीर हैं ।

उन्होंने कहा था: "भारत ने कश्मीर के साथ धोखा किया है । हमने जिस देश के साथ रहने का फैसला किया था, उसने हमें धोखा दिया है । ऐसा लगता है कि हमने 1947 में गलत चुनाव कर लिया था ।" क्या ये संविधान को मानने वाले लोग इस प्रकार की भाषा को स्वीकार कर सकते हैं? क्या उनकी वकालत करते हो? उनका अनुमोदन करते हो?...(व्यवधान) उसी प्रकार से श्रीमान उमर अब्दुल्ला जी ने कहा था, "आर्टिकल 370 को हटाना, ...(व्यवधान) उमर अबदुल्ला जी ने कहा था: आर्टिकल 370

का हटाया जाना ऐसा भूकम्प लाएगा कि कश्मीर भारत से अलग हो जाएगा ।" ...(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी फारुख़ अबदुल्ला जी ने कहा था: " धारा 370 का हटाया जाना कश्मीर के लोगों की आज़ादी का मार्ग प्रशस्त करेगा । अगर धारा 370 हटाई गई तो भारत का झंडा फहराने वाला कश्मीर में कोई नहीं बचेगा ।" क्या इस भाषा से, इस भावना से, क्या हिन्दुस्तान के संविधान को समर्पित कोई भी व्यक्ति इसको स्वीकार कर सकता है? कोई इससे सहमत हो सकता है क्या? ...(व्यवधान) मैं यह बात उनके लिए कह रहा हूं जिनकी आत्मा है । ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, ये वो लोग हैं जिनको कश्मीर की अवाम पर भरोसा नहीं है और इसलिए ऐसी भाषा बोलते हैं । हम वो हैं जिनको कश्मीर की अवाम पर भरोसा है ।...(व्यवधान) हमने भरोसा किया, हमने कश्मीर की अवाम पर भरोसा किया और धारा 370 को हटाया और आज तेज गति से विकास भी कर रहे हैं । ...(व्यवधान) और इस देश के किसी भी क्षेत्र के हालात बिगाड़ने की मंजूरी नहीं दी जा सकती, चाहे वह कश्मीर हो, चाहे नॉर्थ-ईस्ट हो, चाहे केरल हो । कोई भी इजाजत नहीं दी जा सकती । हमारे मंत्री भी पिछले दिनों लगातार जम्मू-कश्मीर का दौरा कर रहे हैं, जनता के साथ संवाद कर रहे हैं । जनता के साथ संवाद करके वहां की समस्याओं का समाधान करने का हम लोग प्रयास कर रहे हैं ।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आज इस सदन से जम्मू-कश्मीर के उज्जवल भविष्य के लिए, जम्मू-कश्मीर के विकास के लिए, जम्मू-कश्मीर के लोगों की आशाओं-अपेक्षाओं को पूर्ण करने के लिए प्रतिबद्ध हैं । हम सब लोग संविधान के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध हैं । लेकिन साथ-साथ मैं लद्दाख के विषय में भी कहना चाहूंगा । ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे देश में सिक्किम एक ऐसा प्रदेश है जिसने एक ऑरगेनिक स्टेट के रूप में अपनी पहचान बनाई है और एक प्रकार से देश के कई राज्यों को, सिक्किम जैसे छोटे राज्य ने

प्रेरणा दी है । सिक्किम के किसान और उसके नागरिक इसके लिए अभिनंदन के अधिकारी हैं । मैं मानता हूं कि लद्दाख के विषय में मेरे मन में बहुत साफ चित्र है । और इसलिए हम चाहते हैं कि लद्दाख जिस प्रकार से हमारे पड़ोस में एन्वायरन्मेंट को लेकर भूटान की भूरी-भूरी प्रशंसा हो रही है, कार्बन न्यूट्रल कंट्री के रूप में दुनिया में उसकी पहचान बनी हुई है । हम देशवासी संकल्प करते हैं और हम सभी को संकल्प करना चाहिए कि हम लद्दाख को भी एक कार्बन न्यूट्रल इकाई के रूप में डेवलप करेंगे । देश के लिए एक पहचान बनाएंगे और उसका लाभ आने वाली पीढ़ियों को एक मॉडल के रूप में मिलेगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है । जब मैं लद्दाख जाऊंगा, तो उनके साथ रह कर, मैं इसकी एक डिजाइन बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा हूं ।

माननीय अध्यक्ष जी, यहां पर जो कानून इस सदन ने पारित किया, जो संशोधन दोनों सदनों में पारित हुआ, जो नोटिफाई हो गया, उसके संबंध में भी कुछ न कुछ कोशिशें हो रही हैं ।...(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय: सारा देश उसके खिलाफ है ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : कुछ लोग कह रहे हैं कि सीएए लाने की इतनी जल्दी क्या थी?...(व्यवधान) कुछ माननीय सदस्यों ने यह कहा है कि यह सरकार भेदभाव कर रही है, यह सरकार हिन्दू और मुस्लिम कर रही है । कुछ ने कहा है कि हम देश के टुकड़े करना चाहते हैं, बहुत कुछ कहा गया और यहां से बाहर बहुत कुछ बोला जाता है । काल्पनिक भय पैदा करने के लिए पूरी शक्ति लगा दी गई है ।...(व्यवधान) वे लोग बोल रहे हैं, जो देश के टुकड़े-टुकड़े करने वालों के बगल में खड़े हो कर फोटो खिंचवाते हैं ।...(व्यवधान)

SHRI DAYANIDHI MARAN (CHENNAI CENTRAL): What are you going to do about the Sri Lankan Tamils in Tamil Nadu? ...(*Interruptions*)

श्री नरेन्द्र मोदी : दशकों से पाकिस्तान यही भाषा बोलता आया है । पाकिस्तान यही बातें कर रहा है ।...(व्यवधान) भारत के मुसलमानों को भड़काने के लिए पाकिस्तान ने कोई कसर नहीं छोड़ी है ।...(व्यवधान) भारत के मुसलमानों को गुमराह करने के लिए पाकिस्तान ने हर खेल खेला है, हर रंग दिखाए हैं और अब उनकी बात नहीं चलती है ।...(व्यवधान) पाकिस्तान की बात बन नहीं पा रही है । मैं हैरान हूं कि जिनको हिन्दुस्तान की जनता ने सत्ता के सिंहासन से घर भेज दिया, वे आज उस काम को कर रहे हैं, जो कभी यह देश सोच भी नहीं सकता था । हमें याद दिलाया जा रहा है कि 'क्विट इंडिया' का नारा देने वाले, 'जय हिन्द' का नारा देने वाले हमारे मुस्लिम ही थे । दिक्कत यही है कि कांग्रेस और उसकी नजर में ये लोग हमेशा ही सिर्फ और सिर्फ मुस्लिम थे, हमारे लिए, हमारी नजर में भारतीय हैं, हिन्दुस्तानी हैं । खान अब्दुल गफ्फार खाँ हो,...(व्यवधान)

SHRI DAYANIDHI MARAN: Are not Muslims Indians? ...(*Interruptions*)

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे लड़कपन में खान अब्दुल गफ्फार खाँ जी के चरण छूने का अवसर मिला है । मैं इसे अपना गर्व मानता हूं । खान अब्दुल गफ्फार खाँ हों, अशफाकुल्ला खाँ हों, बेगम हजरत महल हों, वीर शहीद अब्दुल हमीद हों या पूर्व राष्ट्रपति श्रीमान् ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हों, सब के सब हमारी नजर से भारतीय हैं ।...(व्यवधान)

सदन का समय ज्यादा लेने के लिए मैंने नाम कुछ कम बोले ।...(व्यवधान) आप जोड़ देना । जो नाम लिखवा दें, मेरे भाषण में लिख देना ।...(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय: मौलाना आजाद का नाम लिख दें ।

SHRI NARENDRA MODI : Thank you for this assistance. ...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस और उसके जैसे दलों ने जिस दिन भारत को भारत की नज़र से देखना शुरू कर दिया, उनको अपनी गलती का एहसास होगा, होगा, होगा ।

खैर, मैं कांग्रेस और उनके इको-सिस्टम का भी बहुत आभारी हूँ । उन्होंने सिटिज़नशिप अमेंडमेंट एक्ट को लेकर हो-हल्ला मचाकर रखा है । अगर ये इतना विरोध नहीं करते, इतना हो-हल्ला नहीं करते, तो शायद उनका असली रूप देश को पता ही नहीं चलता ।...(व्यवधान) देश ने देख लिया है कि दल के लिए कौन है और देश के लिए कौन है ।...(व्यवधान) मैं चाहता हूँ कि जब यह चर्चा निकल पड़ी है, तो बात दूर तक चली जाए ।

प्रधान मंत्री बनने की इच्छा किसी की भी हो सकती है और इसमें कोई बुराई नहीं है । लेकिन किसी को प्रधान मंत्री बनना था, इसलिए हिन्दुस्तान के ऊपर एक लकीर खीची गई और देश का बँटवारा कर दिया गया । बँटवारे के बाद जिस तरह से पाकिस्तान में हिन्दुओं, सिखों और अन्य अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हुए, जुल्म हुए, जोर-ज़बरदस्ती हुई उनकी कल्पना तक नहीं की जा सकती है ।

मैं कांग्रेस के साथियों से जरा पूछना चाहता हूँ, क्या आपने कभी भूपेन्द्र कुमार दत्त का नाम सुना है?...(व्यवधान) दादा! आप कांग्रेस में चले गए? ...(व्यवधान) ममता दीदी भाषण सुन रही है । ...(व्यवधान)

कांग्रेस के लिए यह जानना बहुत जरूरी है और जो यहाँ नहीं हैं, उनके लिए भी जानना जरूरी है । भूपेन्द्र कुमार दत्त एक समय में ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी में थे, उसके सदस्य थे । स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 23 साल उन्होंने जेल में बिताए । वे एक ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने न्याय के लिए 78 दिनों तक जेल के अन्दर भूख हड़ताल की थी । यह भी उनके नाम एक रिकॉर्ड है । विभाजन के बाद भूपेन्द्र कुमार दत्त पाकिस्तान में ही रुक गए थे । वहाँ की संविधान सभा के वे सदस्य भी थे । जब

संविधान का काम चल ही रहा था, अभी तो संविधान के काम की शुरुआत के ही दिन थे, उस समय भूपेन्द्र कुमार दत्त ने उस संविधान सभा में जो कहा था, उसे आज मैं दोहराना चाहता हूँ, क्योंकि जो लोग हम पर आरोप मढ़ रहे हैं, उनके लिए यह समझना बहुत जरूरी है । भूपेन्द्र कुमार दत्त ने कहा था- `So far as this side of Pakistan is concerned, the minorities are practically liquified.'

PROF. SOUGATA RAY : Liquidated.

SHRI NARENDRA MODI: Practically liquidated. He also says, `Those of us who are here to live represent near a crore of people still left in East Bengal, live under a total sense of frustration.' भूपेन्द्र कुमार दत्त ने बँटवारे के तुरन्त बाद वहाँ की संविधान सभा में यह दर्द व्यक्त किया था ।

14.00 hrs

स्वतंत्रता के शुरुआत के दिनों से ही वहां के अल्पसंख्यकों की यह हालत थी । ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: आप इंडिया को पाकिस्तान बनाना चाहते हैं । ...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: इसके बाद पाकिस्तान में स्थिति इतनी खराब हो गई कि भूपेन्द्र दत्त को भारत आकर शरण लेनी पड़ी और बाद में उनका निधन भी मां भारती की गोद में हुआ । ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: तो क्या हुआ? ...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: आपके लिए तो कुछ नहीं हुआ । ...(व्यवधान) कुछ नहीं हुआ । ...(व्यवधान)

आपके लिए तो सामान्य है । ...(व्यवधान) आए तो आए, मरे तो मरे । ...(व्यवधान) यही आपकी सोच है । ...(व्यवधान) यही आपकी सोच है, महापुरुष । ...(व्यवधान) यह आपकी सोच है । ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, तब के पाकिस्तान में एक और बड़े स्वतंत्रता सेनानी रुक गए थे -जोगेन्द्र नाथ मंडल ।...(व्यवधान) वे समाज के बहुत ही पीड़ित, शोषित, कुचले समाज का प्रतिनिधित्व करते थे । ...(व्यवधान) उन्हें पाकिस्तान का पहला कानून मंत्री भी बनाया गया था । 9 अक्टूबर, 1950, अभी आजादी के और बंटवारे के दो-तीन साल हुए थे, 9 अक्टूबर, 1950 को उन्होंने अपना इस्तीफा दे दिया था । ...(व्यवधान) उनके इस्तीफे का एक पैराग्राफ, इस्तीफे में जो लिखा था, उसको मैं कोट करना चाहता हूं । उन्होंने लिखा था - "I must say that this policy of driving out Hindus from Pakistan has succeeded completely in West Pakistan and is nearing completion in East Pakistan." उन्होंने आगे कहा था - "Pakistan has not given the Muslim League, entire satisfaction and a full sense of security. They now want to

get rid of the Hindu intelligentsia so that the political, economic and social life of Pakistan may not in any way be influenced by them."

यह मंडल जी ने अपने इस्तीफे में लिखा था । इन्हें भी आखिरकार भारत ही आना पड़ा और उनका निधन भी मां भारती की गोद में हुआ । इतने दशकों के बाद भी पाकिस्तान की सोच नहीं बदली है । वहां आज भी अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हो रहे हैं । अभी-अभी नानकाना साहेब के साथ क्या हुआ, सारे देश और दुनिया ने देखा है । ऐसा नहीं है कि यह सिर्फ हिन्दू और सिखों के साथ ही होता है, और भी माइनॉरिटीज़ के साथ ऐसा ही ज़ुल्म वहां होता है । इसाइयों को भी ऐसी ही पीड़ा झेलनी पड़ती है । …(व्यवधान)

सदन में चर्चा के दर्मियान गांधी जी के कथन को लेकर भी बात कही गई है । कहा गया कि सीएए पर सरकार जो कह रही है, वह गांधी जी की भावना नहीं थी । खैर, कांग्रेस जैसे दलों ने तो गांधी जी की बातों को दशकों पहले छोड़ दिया था । …(व्यवधान) Quotable quote is available, हमने पचासों बार दे दिया है । …(व्यवधान) आपने तो गांधी जी को छोड़ दिया है । …(व्यवधान) इसलिए न मैं, न देश आपसे कोई अपेक्षा करता है, लेकिन जिसके आधार पर कांग्रेस की रोज़ी-रोटी चल रही है, मैं आज उनकी बात करना चाहता हूं । वर्ष 1950 में नेहरू-लियाकत समझौता हुआ ।

भारत और पाकिस्तान में रहने वाले माइनोरिटीज की सुरक्षा को लेकर यह समझौता हुआ । समझौते का आधार- पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार नहीं होगा । पाकिस्तान में रहने वाले जो लोग हैं, उनमें जो धार्मिक अल्पसंख्यक हैं, जिनकी बात हम बोल रहे हैं, उनके संबंध में नेहरू और लियाकत के बीच में एग्रीमेंट हुआ था । अब कांग्रेस को जवाब देना होगा, नेहरू जैसे इतने बड़े सेक्यूलर, नेहरू जैसे इतने बड़े महान विचारक, इतने बड़े विजनरी और आपके लिए सब कुछ, उन्होंने उस समय वहां की माइनोरिटी के बजाय "सारे नागरिक" ऐसे शब्द प्रयोग क्यों

नहीं किए? अगर इतने ही महान और इतने ही उदार थे तो क्यों नहीं किया? कोई तो कारण होगा? लेकिन इस सत्य को आप कब तक झुठलाओगे? माननीय अध्यक्ष जी, यह उस समय की बात है । यह मैं उस समय की बात बता रहा हूं । ...(व्यवधान) नेहरू जी इस समझौते में पाकिस्तान की माइनोरिटी, इस बात पर कैसे मान गए? जरूर कुछ न कुछ वजह होगी । जो बात हम आज बता रहे हैं, वही बात उस समय नेहरू जी ने बताई थी ।

माननीय अध्यक्ष जी, नेहरू जी ने माइनोरिटी शब्द का प्रयोग क्यों किया? यह आप नहीं बोलेंगे, क्योंकि आपको तकलीफ है । लेकिन नेहरू जी खुद इसका जवाब देकर गए हैं । मुझे मालूम है आप उनको भी छोड़ दोगे । जहां जरूरत पड़े, आप किसी को भी छोड़ सकते हैं । नेहरू जी ने नेहरू-लियाकत समझौता साइन होने के एक साल पहले असम के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमान गोपीनाथ जी को एक पत्र लिखा था । गोपीनाथ जी को जो पत्र लिखा और उसमें जो लिखा था, मैं उसको कोट करना चाहता हूं । उन्होंने पत्र में लिखा था । जो लोग कहते हैं न कि हम हिन्दू-मुस्लिम कर रहे हैं, देश को बांट रहे हैं । नेहरू जी ने क्या कहा था, यह आप याद रखना । गोपीनाथ जी, जो असम के मुख्यमंत्री थे, उनको नेहरू जी ने लिखा था – "आपको हिन्दू शरणार्थियों और मुस्लिम इमिग्रेंट्स, इसके बीच फर्क करना ही होगा और देश को इन शरणार्थियों की जिम्मेदारी लेनी ही पड़ेगी ।" उस समय के असम के मुख्यमंत्री को उस समय के भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू जी द्वारा लिखी हुई चिट्ठी है । नेहरू-लियाकत समझौते के कुछ महीने बाद ही नेहरू जी का इसी संसद के फ्लोर पर 5 नवम्बर, 1950 का उनका एक बयान है । 5 नवम्बर, 1950 को नेहरू जी ने कहा था कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो प्रभावित लोग भारत में सेटल होने के लिए आए हैं, ये लोग नागरिकता मिलने के हकदार हैं और अगर इसके लिए कानून अनुकूल नहीं है तो कानून में बदलाव किया जाना चाहिए । ...(व्यवधान)

वर्ष 1963 में लोक सभा के इसी सदन में और इसी जगह से वर्ष 1963 में कालिंग अटेंशन मोशन हुआ । उस समय के प्रधानमंत्री नेहरू तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में भी जिम्मेदारी संभाल रहे थे ।

मोशन का जवाब देने के लिए जब विदेश राज्य मंत्री श्रीमान् दिनेश सिंह जी बोल रहे थे, तो आखिर में प्रधान मंत्री नेहरू जी ने उनको बीच में टोकते हुए कहा था । उन्होंने जो कहा था, मैं वह कोट करना चाहता हूं कि "पूर्वी पाकिस्तान में वहां की अथॉरिटी हिन्दुओं पर जबरदस्त दबाव बना रही है ।" यह पंडित जी का स्टेटमेंट था ।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: हम भी यही शिकायत करते हैं ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : पाकिस्तान के हालात को देखते हुए गांधी जी ही नहीं, बल्कि नेहरू जी की भी यही भावना रही थी । इतने सारे दस्तावेज हैं, चिट्ठियां हैं, स्टैंडिंग कमेटी की रिपोर्ट्स हैं ।...(व्यवधान) सभी इसी तरह के कानून की वकालत करते रहे हैं ।...(व्यवधान) मैंने इस सदन में तथ्यों के आधार पर...(व्यवधान)

मैं अब कांग्रेस से खास रूप से यह पूछना चाहता हूं और उनका ईको सिस्टम भी मेरा सवाल समझेगी । मैंने जो ये सारी बाते बताई हैं, क्या पंडित नेहरू जी कम्युनल थे? मैं ज़रा जानना चाहता हूं । क्या पंडित नेहरू जी हिन्दू-मुस्लिम में भेद किया करते थे?...(व्यवधान) क्या पंडित नेहरू जी हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते थे? उन्होंने जो बातें कही हैं, क्या पंडित नेहरू जी हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते थे?...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस की दिक्कत यह है कि वह बातें बनाती है, 'झूठे' वादे करती है और वह दशकों तक वादों को टालती रहती है ।

श्री अधीर रंजन चौधरी: महोदय, यह 'झूठ' बात डिलीट कीजिए । यह 'झूठ' शब्द अनपार्लियामेन्ट्री है ।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : आज हमारी सरकार अपने राष्ट्र निर्माताओं की भावनाओं पर चलते हुए फैसले ले रही है, तो कांग्रेस को दिक्कत हो रही है ।...(व्यवधान) और मैं इस देश के 130 करोड़ नागरिकों को इस सदन के माध्यम से फिर से यह स्पष्ट करना चाहता हूं, मैं बड़ी जिम्मेवारी के साथ संविधान की मर्यादाओं को समझते हुए कहना चाहता हूं, संविधान की जिम्मेवारियों को समझते हुए कहना चाहता हूं, संविधान के प्रति समर्पण भाव से कहना चाहता हूं, देश के 130 करोड़ नागरिकों से कहना चाहता हूं कि सीएए, इस बिल से, इस एक्ट से हिन्दुस्तान के किसी भी नागरिक पर किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं होने वाला है । चाहे वह हिन्दू हो, मुस्लिम हो, सिख हो, ईसाई हो, किसी को भी नहीं होने वाला है ।...(व्यवधान) इससे भारत की माइनोरिटीज़ को कोई नुकसान नहीं होने वाला है ।...(व्यवधान) फिर भी जिन लोगों को देश की जनता ने नकार दिया है, वे लोग वोट बैंक की राजनीति करने के लिए यह खेल खेल रहे हैं । मैं ज़रा पूछना चाहता हूं ।...(व्यवधान)

मैं विशेष रूप से कांग्रेस के लोगों से पूछना चाहता हूं, जो माइनोरिटी के नाम पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेकते रहते हैं । क्या कांग्रेस को सन् 1984 के दिल्ली के दंगे याद हैं?...(व्यवधान) क्या वह माइनोरिटी नहीं थी?...(व्यवधान) वह माइनोरिटी थी कि नहीं थी?...(व्यवधान) हमारे सिख भाइयों के गलों में टायर बांध-बांधकर उनको जला दिया गया था । ...(व्यवधान)

इतना ही नहीं, आपने सिख दंगों के आरोपियों को जेल में भेजने तक का काम नहीं किया है । ...(व्यवधान) इतना ही नहीं, आज जिन पर सिख दंगों को भड़काने के आरोप लगे हुए हैं, आप आज उनको मुख्य मंत्री बना देते हैं ।...(व्यवधान) सिख दंगों के आरोपियों को सजा दिलाने में, हमारी उन विधवा माताओं को तीन-तीन दशकों तक न्याय के लिए इंतजार करना पड़ा है । क्या वह माइनोरिटी

नहीं थी?...(व्यवधान) क्या माइनॉरिटी के लिए दो-दो तराजू होंगे? क्या यही आपके तरीके होंगे? ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस पार्टी – जिसने इतने सालों तक देश में राज किया, आज यह देश का दुर्भाग्य है कि जिनसे एक जिम्मेवार विपक्ष के रूप में देश को अपेक्षाएं थीं, वे आज गलत रास्तों पर चल पड़े हैं । यह रास्ता आपके लिए भी मुसीबत पैदा करने वाला है । देश को भी संकट में डालने वाला है । यह चेतावनी मैं इसलिए दे रहा हूँ कि हम सबको देश की चिंता होनी चाहिए । देश के उज्जवल भविष्य की चिंता होनी चाहिए । आप सोचिए, अगर राजस्थान की विधान सभा कोई निर्णय करे, कोई व्यवस्था खड़ी करे और राजस्थान में वह कोई मानने को तैयार न हो, जलसे-जुलूस निकाले, हिंसा करे, आगजनी करे, आपकी सरकार है, क्या स्थिति बनेगी? मध्य प्रदेश – आप वहां बैठे हैं । मध्य प्रदेश की विधान सभा कोई निर्णय करेगी और वहां की जनता उसके खिलाफ इसी प्रकार से निकल पड़े । क्या देश ऐसे चल सकता है? क्या एनार्की का रास्ता सही है? ...(व्यवधान) इसलिए आपने बहुत कुछ किया है । ...(व्यवधान) अपने इतना गलत किया है, इसीलिए तो वहां बैठना पड़ा है । यह आपके कारनामों का ही परिणाम है कि जनता ने आपको वहां बिठाया है । ...(व्यवधान) इसलिए लोकतांत्रिक तरीके से देश में हरेक को अपनी बात बताने का हक है । लेकिन झूठ और अफवाहें फैला कर, लोगों को गुमराह कर के हम देश का कोई भला नहीं कर पाएंगे । इसलिए मैं आज संविधान की बातें करने वालों को विशेष रूप से आग्रह करता हूँ – आइए, संविधान का सम्मान करें । आइए, मिल-बैठ कर को देश चलाएं । आइए, देश को आगे ले जाएं । 5 ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के लिए एक संकल्प ले कर हम चलें । ...(व्यवधान) आइए, देश के 15 करोड़ परिवार, जिनको पीने का शुद्ध जल नहीं मिल रहा है, वह पहुंचाने का संकल्प करें । ...(व्यवधान) आइए, देश के हर गरीब को पक्का घर लेने के काम को हम मिल कर के आगे बढ़ाएं, ताकि उनको पक्का घर मिले । आइए, देश के किसान हों, मछुआरे हों, पशुपालक हों, उनकी आय बढ़ाने के लिए हम कामों को सफलतापूर्वक आगे

बढ़ाएं । …(व्यवधान) आइए हर पंचायत को ब्रॉडबैंड कनैक्टिविटी दें । …(व्यवधान) आइए, एक भारत-श्रेष्ठ भारत बनाने का संकल्प ले कर हम आगे बढ़ें । …(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, भारत केउज्जवल भविष्य केलिए हम मिल-बैठ कर आगे चलें । …(व्यवधान) इसी एक भावना केसाथ मैं माननीय राष्ट्रपति जी को अनेक-अनेक धन्यवाद करते हुए, अपनी वाणी को विराम देता हूं । …(व्यवधान) अध्यक्ष जी, मैं आपका भी विशेष आभार व्यक्त करता हूँ । …(व्यवधान)